International Research Journal of Humanities, Language and Literature

ISSN: (2394-1642)

Impact Factor 5.401 Volume 5, Issue 3,March 2018

Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

जयशंकर प्रसाद की काव्यकृति "कामायनी" का अध्ययन

डॉ सिद्धि जोशी

सह-आचार्य हिन्दी

राजकीय कन्या महाविद्यालय, झुंझुनूं

सारः

जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध कविता "कामायनी" हिंदी साहित्य की आधारशिला है, जिसमें गहन दार्शनिक विषयों और समृद्ध पौराणिक प्रतीकों का समावेश है। यह महाकाव्य प्राचीन भारतीय पौराणिक कथाओं की पृष्ठभूमि में मानवीय भावनाओं और दिव्यता के बीच के अंतर्संबंध की खोज करता है। प्रसाद अपने नायक मनु और श्रद्धा की रूपक यात्रा के माध्यम से मानव मानस की गहराई में उतरते हैं, जो अस्तित्व के मानवीय और दिव्य पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। कविता सृजन, विनाश, प्रेम और ज्ञान के तत्वों को जटिल रूप से बुनती है, जो जीवन की चक्रीय प्रकृति और ज्ञान और सत्य की शाश्वत खोज को दर्शाती है। "कामायनी" के माध्यम से, प्रसाद ने बौद्धिक गहराई के साथ काव्यात्मक सौंदर्य को कुशलता से जोड़ा है, जो मानव प्रकृति और आध्यात्मिकता की एक कालातीत खोज प्रस्तुत करता है। यह कृति प्रसाद की साहित्यिक प्रतिभा और काव्यात्मक कलात्मकता को गहन दार्शनिक जांच के साथ मिश्रित करने की उनकी क्षमता का प्रमाण है।

***मुख्य शब्द*:-** *जयशंकर प्रसाद, कामायनी , काव्यकृति*

प्रस्तावना

जयशंकर प्रसाद का जीवन परिचय :

जयशंकर प्रसाद जी का जन्म सन् 1886 ई. में काशी के एक संपन्न 'सुंघनी साहु' परिवार में हुआ। प्रसाद जी देवीप्रसाद साहु जी के छोटे पुत्र थे। प्रसाद जी के कई भाई-बहनों की पहले ही मृत्यु हो चुकी थी। अपने भाई-बहनों में सबसे छोटे होने के कारण प्रसाद जी को माता-पिता का प्यार दुलार प्राप्त हुआ। प्रसाद जी की स्कूली शिक्षा अल्पकालीन रही। १२ वर्ष की अवस्था में पिता की मृत्यु, पारिवारिक गृह कलह, जीवनगत संघर्ष, परिवार के प्रमुख सदस्यों की मृत्यु आदि ने प्रसाद जी को पाठशालीय शिक्षा समाप्त करने हेतु बाध्य कर दिया। इसलिए वे बहुत समय तक किसी विद्यालय अथवा महाविद्यालय में अध्ययन न कर सके। आठवीं कक्षा के बाद ही उन्हें

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

अपनी स्कूली शिक्षा समाप्त कर देनी पडी। लेकिन बडे भाई श्री. शंभुरत्न जी ने उनकी शिक्षा-व्यवस्था घर पर ही कर दी और वे घर पर ही रहकर हिंदी, संस्कृत, उर्दू और अंग्रेजी का अध्ययन करने लगे।

सत्रह वर्ष की अवस्था में भाई शंभुरत्न की मृत्यु के बाद एक साथ ही व्यवसाय और परिवार की जिम्मेदारी उनपर आ गई। उजडी हुई गृहस्थी की चिंता उन्हें सताने लगी। लेकिन युवक प्रसाद ने अत्यंत कौशल के साथ अपने दायित्व का निर्वाह किया। उनके जीवन के इन सारे सुख-दुखों का चित्रण उनके काव्य में दिखाई देता है।

जयशंकर प्रसाद जी ने तीन विवाह किए थे। प्रथम पत्नी की मृत्यु क्षय रोग से तथा द्दवितीय पत्नी का प्रसूति के समय देहावसान हो गया था। तीसरी पत्नी से उन्हें शंकर नामक पुत्र की प्राप्ति हुई। जीवन के अंतिम दिनों में जयशंकर प्रसाद जी उदर रोग से ग्रस्त हो गए थे और इसी रोग से 15 नवम्बर, सन 1937 ई. को इस बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति का देहांत हो गया ।

जयशंकर प्रसाद का व्यक्तित्व :

जयशंकर प्रसाद का व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षक था। वे मंझोले कद के थे। उनका वर्ण गौर और मुख गोल था। उनकी हँसी बड़ी स्वाभाविक और मधुर थी। जवानी में वे ढाका की मलमल का कुरता और बढ़िया धोती पहनते थे। परंतु बाद में खर का उपयोग करने लगे थे। भारत का प्राचीन इतिहास का अध्ययन जयशंकर प्रसाद का प्रिय विषय था। वे केवल ऐतिहासिक घटनाओं के बाह्य या तथ्यात्मक रूप से ही संतुष्ट होने वाले प्राणी नहीं थे, बल्कि उन घटनाओं के भीतर प्रविष्ट होकर तत्त्व चिंतन से उनके मर्म का उद्‌घाटन करने में लगे रहते थे। यही कारण है कि उनके ऐतिहासिक नाटक अन्तर्द्वन्द्व प्रधान है। उनके कथानकों का आधार सांस्कृतिक संघर्ष है।

जयशंकर प्रसाद संस्कृति, सभ्यता, धर्म, दर्शन और नीति के माध्यम से इतिहास का मूल्यांकन करते थे। उनका ऐतिहासिक और शास्त्रीय ज्ञान असाधारण था । यह एक आश्चर्य की बात थी कि वे दार्शनिक चिंतन और ऐतिहासिक अध्ययन मनन के लिए कम अवकाश निकाल पाते थे।

उनकी दिनचर्या में अध्ययन और साहित्य साधना का प्रथम और प्रमुख स्थान प्राप्त था। ब्रह्म मुहूर्त में उठकर साहित्य सर्जन में लीन हो जाना उनका अभ्यास ही हो गया था। जब अध्ययन और साहित्य सृजन हो जाता था, तब वे बेनिया बाग में टहलने के लिए निकल पड़ते थे। वहाँ भी साहित्यिक मित्रों के साथ वार्तालाप किया करते थे। जयशंकर प्रसाद अन्तर्मुखी व्यक्ति थे।

जयशंकर प्रसाद की प्रमुख रचनाएँ :

काव्य : कामायनी, आँसू, झरना, लहर, महाराणा का महत्त्व, प्रेम पथिक, कानन कुसुम, चित्राधार, करुणालय ।

नाटक : राज्यश्री, विशाख, अजातशत्रु, जनमेजय का नाग यज्ञ, कामना, स्कन्दगुप्त, एक घूंट, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, कल्याणी - परिणय, सज्जन ।

उपन्यास : कंकाल, तितली, इरावती.

कहानी : आकाशदीप, इंद्रजाल, प्रतिध्वनि, आँधी, छाया।

निबंध और आलोचना : काव्य कला तथा अन्य निबंध में इनके आलोचनात्मक निबंध संग्रहीत हैं।

चम्पू : जयशंकर प्रसाद ने चम्पू काव्य की भी रचना की है। इनकी इस प्रकार की रचना का नाम है- उर्वशी । इसके साथ ही इन्होंनें एक काव्य कहानी भी लिखी है जो प्रेम राज्य के नाम से प्रसिद्ध है।

जयशंकर प्रसाद जी की रचनाओं के उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि उन्होंने तत्कालीन युग में प्रचलित गद्य एवं पद्य साहित्य की समस्त विद्याओं में लिखा तथा साहित्य के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

'कामायनी' का परिचय :

'कामायनी' जयशंकर प्रसाद जी की श्रेष्ठ कृति है । कामायनी में मनु और श्रद्धा की कहानी है जिसका सारा इतिवृत्त मनु और श्रद्धा के मिलन-वियोग, पुनर्मिलन, पुनर्वियोग, मनु और इडा का मिलन, सारस्वतनगर का निर्माण, जनविद्रोह, रहस्य-भेद और आनंद की प्राप्ति आदि घटनाओं से जुड़ा हुआ है। 'कामायनी' की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें अतीत के धरातल पर वर्तमान युग की समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है।

कामायनी हिंदी भाषा का एक महाकाव्य है। इसके रचयिता जयशंकर प्रसाद हैं। यह आधुनिक छायावादी युग का सर्वोत्तम और प्रतिनिधि हिंदी महाकाव्य है। 'प्रसाद' जी की यह अंतिम काव्य रचना 1935 ई. में प्रकाशित हुई, परंतु इसका प्रणयन प्राय: 7-8 वर्ष पूर्व ही प्रारंभ हो गया था। 'चिंता' से प्रारंभ कर 'आनंद' तक 15 सर्गों के इस महाकाव्य में मानव मन की विविध अंतर्वृत्तियों का क्रमिक उन्मीलन इस कौशल से किया गया है कि मानव सृष्टि के आदि से अब तक के जीवन के मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक विकास का इतिहास भी स्पष्ट हो जाता है।

कला की दृष्टि से कामायनी, छायावादी काव्यकला का सर्वोत्तम प्रतीक माना जा सकता है। चित्तवृत्तियों का कथानक के पात्र के रूप में अवतरण इस महाकाव्य की अन्यतम विशेषता है। और इस दृष्टि से लज्जा, सौंदर्य, श्रद्धा और इड़ा का मानव रूप में अवतरण हिंदी साहित्य की अनुपम निधि है। कामायनी प्रत्यभिज्ञा दर्शन पर आधारित है। साथ ही इस पर अरविन्द दर्शन और गांधी दर्शन का भी प्रभाव यत्र तत्र मिल जाता है।

'कामायनी' का प्रमुख कार्य भाववृत्ति, कर्मवृत्ति तथा ज्ञानवृत्ति के सामंजस्य द्वारा अखण्ड आनंद की अनुभूति को प्राप्त करना है। मनु में पुरूष सुलभ मनन - शीलता, स्वार्थपरता और कामुकता विद्यमान है। श्रद्धा नारीत्व की सजीव और साकार मूर्ति है। वैसे कामायनी के कथानक की रचना मनु को केंद्र में रखकर की गई है किंतु कथा त्याग, समर्पण एवं ममता की प्रतिमूर्ति श्रद्धा में समाहित हो गई है। मनु के धिक्कार दिए जाने पर भी श्रद्धा ममतामयी बनकर मनु को सही राह दिखाती है और आनंदप्राप्ति में सहयोग देती है।

देव संस्कृति के विनाश से लेकर पूर्ण आनंद प्राप्त मानव संस्कृति के संस्थापन की कहानी कामायनी महाकाव्य में चित्रित हुई है। जयशंकर प्रसाद जी ने कामायनी का निर्माण विविध ग्रंथों, पुराण, शतपथ ब्राह्मण, उपनिषद आदि में बिखरी हुई सामग्री को इकट्ठा कर किया है। कामायनी मुख्य रूप से मनु, श्रद्धा और इडा की कहानी है। इस कथानक में मानव मन की विविध वृत्तियाँ जैसे चिंता, आशा, काम, लज्जा, आनंद आदि का संयोजन कर अत्यंत कुशलता के साथ उसका मनोवैज्ञानिक रूप प्रस्तुत किया है।

कथानक

मानव के अग्रजन्मा देव निश्चिंत जाति के जीव थे। किसी भी प्रकार की चिंता न होने के कारण वे 'चिर-किशोर-वय' तथा 'नित्यविलासी' देव आत्म-मंगल-उपासना में ही विभोर रहते थे। प्रकृति यह अतिचार सहन न कर सकी और उसने अपना प्रतिशोध लिया। भीषण जलप्लावन के परिणामस्वरूप

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

देवसृष्टि का विनाश हुआ, केवल मनु जीवित बचे। देवसृष्टि के विध्वंस पर जिस मानव जाति का विकास हुआ उसके मूल में थी 'चिंता', जिसके कारण वह जरा और मृत्यु का अनुभव करने को बाध्य हुई। चिंता के अतिरिक्त मनु में दैवी और आसुरी वृत्तियों का भी संघर्ष चल रहा था जिसके कारण उनमें एक ओर आशा, श्रद्धा, लज्जा और इड़ा का आविर्भाव हुआ तो दूसरी ओर कामवासना, ईर्षा और संघर्ष की भी भावना जगी। इन विरोधी वृत्तियों के निरंतर घात-प्रतिघात से मनु में निर्वेद जगा और श्रद्धा के पथप्रदर्शन से यही निर्वेद क्रमशः दर्शन और रहस्य का ज्ञान प्राप्त कर अंत में आंनद की उपलब्धि का कारण बना। यह चिंता से आनंद तक मानव के मनौवैज्ञानिक विकास का क्रम है। साथ ही मानव के आखेटक रूप में प्रारंभ कर श्रद्धा के प्रभाव से पशुपालन, कृषक जीवन और इड़ा के सहयोग से सामाजिक और औद्योगिक क्रांति के रूप में भौतिक विकास एवं अंत में आध्यात्मिक शांति की प्राप्ति का उद्योग मानव के सांस्कृतिक विकास के विविध सोपान हैं। इस प्रकार कामायनी मानव जाति के उद्भव और विकास की कहानी है।

प्रसाद ने इस काव्य के प्रधान पात्र 'मनु' और कामपुत्री कामायनी 'श्रद्धा' को ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में माना है, साथ ही जलप्लावन की घटना को भी एक ऐतिहासिक तथ्य स्वीकार किया है। शतपथ ब्राह्मण के प्रथम कांड के आठवें अध्याय से जलप्लावन संबंधी उल्लेखों का संकलन कर प्रसाद ने इस काव्य का कथानक निर्मित किया है, साथ ही उपनिषद् और पुराणों में मनु और श्रद्धा का जो रूपक दिया गया है, उन्होंने उसे भी अस्वीकार नहीं किया, वरन् कथानक को ऐसा स्वरूप प्रदान किया जिसमें मनु, श्रद्धा और इड़ा के रूपक की भी संगति भली भाँति बैठ जाए। परंतु सूक्ष्म सृष्टि से देखने पर जान पड़ता है कि इन चरित्रों के रूपक का निर्वाह ही अधिक सुंदर और सुसंयत रूप में हुआ, ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में वे पूर्णतः एकांगी और व्यक्तित्वहीन हो गए हैं।

मनु मन के समान ही अस्थिरमति हैं। पहले श्रद्धा की प्रेरणा से वे तपस्वी जीवन त्याग कर प्रेम और प्रणय का मार्ग ग्रहण करते हैं, फिर असुर पुरोहित आकुलि और किलात के बहकावे में आकर हिंसावृत्ति और स्वेच्छाचरण के वशीभूत हो श्रद्धा का सुख-साधन-निवास छोड़ झंझा समीर की भाँति भटकते हुए सारस्वत प्रदेश में पहुँचते हैं; श्रद्धा के प्रति मनु के दुर्व्यवहार से क्षुब्ध काम का अभिशाप सुन हताश हो किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं और इड़ा के संसर्ग से बुद्धि की शरण में जा भौतिक विकास का मार्ग अपनाते हैं। वहाँ भी संयम के अभाव के कारण इड़ा पर अत्याचार कर बैठते हैं और प्रजा से उनका संघर्ष होता है। इस संघर्ष में पराजित और प्रकृति के रुद्र प्रकोप से विक्षुब्ध मनु जीवन से विरक्त हो पलायन कर जाते हैं और अंत में श्रद्धा के पथप्रदर्शन में उसका अनुसरण करते हुए आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करते हैं। इस प्रकार श्रद्धा—आस्तिक्य भाव—तथा इड़ा—बौद्धिक क्षमता—का मनु के मन पर जो प्रभाव पड़ता है उसका सुंदर विश्लेषण इस काव्य में मिलता है।

सर्ग

कामायनी १५ सर्ग (अध्यायों) का महाकाव्य है। ये सर्ग निम्नलिखित हैं-

1. चिन्ता 2. आशा 3. श्रद्धा 4. काम 5. वासना 6. लज्जा 7. कर्म 8. ईर्ष्या 9. इड़ा (तर्क, बुद्धि) 10. स्वप्न 11. संघर्ष 12. निर्वेद (त्याग) 13. दर्शन 14. रहस्य 15. आनन्द।

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**

सूत्र :- (१) चिंता की आशा से श्रद्धा ने काम वासना को लज्जित किया।

(२) कर्म की ईर्ष्या से बुद्धि/तर्क ने स्वप्न में संघर्ष किया।

(३) निर्वेद (निद्रा)/ मोह माया का त्याग कर ईश्वरीय दर्शन द्वारा रहस्य मय आनंद की प्राप्ति होगी।

मूल संवेदना

काव्य रूप की दृष्टि से कामायनी चिंतनप्रधान है, जिसमें कवि ने मानव को एक महान् संदेश दिया है। 'तप नहीं, केवल जीवनसत्य' के रूप में कवि ने मानव जीवन में प्रेम की महत्ता घोषित की है। यह जगत् कल्याणभूमि है, यही श्रद्धा की मूल स्थापना है। इस कल्याणभूमि में प्रेम ही एकमात्र श्रेय और प्रेय है। इसी प्रेम का संदेश देने के लिए कामायनी का अवतार हुआ है। प्रेम मानव और केवल मानव की विभूति है। मानवेतर प्राणी, चाहे वे चिरविलासी देव हों, चाहे देव और प्राण की पूजा में निरत असुर, दैत्य और दानव हों, चाहे पशु हों, प्रेम की कला और महिमा वे नहीं जानते, प्रेम की प्रतिष्ठा केवल मानव ने की है। परंतु इस प्रेम में सामरस्य की आवश्यकता है। समरसता के अभाव में यह प्रेम उच्छृंखल प्रणयवासना का रूप ले लेता है। मनु के जीवन में इस सामरस्य के अभाव के कारण ही मानव प्रजा को काम का अभिशाप सहना पड़ रहा है। भेद-भाव, ऊँच-नीच की प्रवृत्ति, आडंबर और दंभ की दुर्भावना सब इसी सामरस्य के अभाव से उत्पन्न होती हैं जिससे जीवन दुःखमय और अभिशापग्रस्त हो जाता है। कामायनी में इसी कारण समरसता का आग्रह है। यह समरसता द्वंद्व भावना में सामंजस्य उपस्थित करती है। संसार में द्वंद्वों का उद्गम शाश्वत तत्व है। फूल के साथ काँटे, भाव के साथ अभाव, सुख के साथ दुःख और रात्रि के साथ दिन नित्य लगा ही रहता है। मानव इनमें अपनी रुचि के अनुसार एक को चुन लेता है, दूसरे को छोड़ देता है और यही उसके विषाद का कारण है। मानव के लिए दोनों को स्वीकार करना आवश्यक है, किसी एक को छोड़ देने से काम नहीं चलता। यही द्वंद्वों की समन्वय स्थिति ही सामरस्य है। प्रसाद ने हृदय और मस्तिष्क, भक्ति और ज्ञान, तप, संयम और प्रणय, प्रेम, इच्छा, ज्ञान और क्रिया सबके समन्वय पर बल दिया है।

उद्देश्य

1. प्रसाद की दार्शनिक चेतना एवं विविध प्रभाव का अध्ययन करने के लिए
2. जयशंकर प्रसाद की काव्यकृति "कामायनी" का अध्ययन करने के लिए

अध्ययन पद्धति :

यह अध्ययन मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेपण पर आधारित है । साथ ही ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति के आधार पर विभिन्न संस्थाओं, कार्यालयों एवं पुस्तकालयों से तथ्यों का संकलन किया गया है । वर्तमान अध्ययन मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर ही आधारित है।

विश्लेष्ण

प्रसाद अपने युग के सर्वोत्कृष्ट दार्शनिक कवि थे। उनकी रचनाओं में विश्व मानव की वैचारिक धाराओं और चिंतन दर्शन का व्यापक प्रभाव परिलक्षित होता है। प्रसाद ने विभिन्न रूढ़ियों से ग्रस्त मनुष्यों का मार्ग प्रशस्त किया और अपने दार्शनिक चिन्तन के माध्यम से मानव को विजयिनी बनाने का आजीवन प्रयत्न किया। प्रसाद

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**

के समय में जिन वैचारिक आन्दोलनों का प्रारम्भ हुआ था, उन सबके नवीन मूल्यों, नवीन प्रतिमानों एवं नवीन मान्यताओं को भारतीय अद्वैत विचारधारा से सम्बन्धित कर आध्यात्मिक रहस्यवादिता को प्रतिष्ठापित करने का काव्यात्मक प्रयास किया ।

प्रसाद ने वस्तुतः उपयोगितावादी युगानुकूल नवीन दार्शनिक चेतना को प्रवाहित किया। वे सम्पूर्ण विश्व को आनन्दमग्न देखना चाहते थे। उन्होंने देखा कि भौतिकवाद आज के युग को अंधकार के गर्त मे ले जा रहा है। अतएव वे ऐसे दार्शनिक विचारों की ओर प्रवृत्त हुए, जो व्यावहारिक जीवन में विपमता के स्थान पर समरसता ला सकें। उन्होंने गहन चिंतन और मनन करने के पश्चात् निर्णय लिया कि आधुनिक युग को एक ऐसे चिन्तन की आवश्यकता हे, जो संसार की सत्यता का प्रतिपादन करता हुआ मानव को कर्मण्यता, कर्तव्य परायणता आदि की ओर प्रवृत्त करते हुए, मानवों में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को जागृत कर सके। कहने की आवश्यकता नहीं कि प्रसाद ने शैव सम्प्रदाय के प्रत्यभिज्ञा - दर्शन तथा उपनिपदों के माध्यम से ऐसे ही दार्शनिक चेतना को प्रदान किया । प्रसाद ने अपनी इस दार्शनिक चेतना के द्वारा आज की चिर दग्ध - दुःखी वसुधा को वह पुनीत मार्ग बताने का प्रयास किया है, जिस पर चलकर अतृप्त एवं असन्तुष्ट मानव अपार सुख एवं सन्तोप प्राप्त कर सकता है।

प्रसाद की चिन्तनधारा पर विभिन्न दर्शनों की विचारधारा का व्यापक प्रभाव दिखाई देता है। जिन पर हम यहाँ विचार करेंगे-

प्रसाद पर नियतिवादी विचारधारा का विकास, शैवागमों के आधार पर हुआ है। जिस प्रकार शैवागमों में 'नियति को सम्पूर्ण संसार के कार्य व्यापार को संचालन करने वाली शक्ति बताया गया है, उसी रूप में प्रसाद ने नियति को स्वीकार किया है । नियति को अत्यन्त व्यापक एवं महान शक्ति बताया गया है। यह नीति मानव जीवन को आगे बढ़ाते हुये उसके कर्मचक्र का प्रवर्तन करती है। कामायनी के 'रहस्य सर्ग' में श्रद्धा कर्मलोक का परिचय देकर उसे नियति से संचालित मानती है

"नियति चलाती कर्म चक्र यह तृष्णा जनित ममत्व वासना,

पाणि-पदमय पंच - भूत की यहाँ हो रही है उपासना । '

'अजातशत्रु' में जीवक के शब्दों में 'अदृष्ट तो मेरा सहरा है । नियति की डोरी पकड़कर में निर्भय कर्मकूप में कूद सकता हूँ क्योंकि मुझे विश्वास है कि जो होना है वह तो होगा ही फिर कायर क्यों बनूँ । कर्म से क्यों विरक्त रहूँ। 2 इस प्रकार 'नियति' एक ऐसी शक्ति जो सम्पूर्ण संसार के जीवन क्रम का निर्माण करती है। यही प्रसाद का नियतिवाद है, जिसमें नियति विश्व में उत्पन्न दंभ, अहंकारादि अतिवादों की रोकथाम करती हुई सम्पूर्ण संसार का नियमन एवं जीवों का कल्याण करती है ।

करूणा का प्रभाव प्रसाद पर वैष्णव एवं बौद्ध दोनों से पड़ा है, बौद्ध दर्शन में जीवात्मा अन्तिम लक्ष्य महाकरूणा को प्राप्त करना है। बौद्ध धर्म के अनुसार बुद्ध वही व्यक्ति बन सकता है, जिसमें पूजा के साथ महाकरूणा का भाव भी विद्यमान हो। वैष्णवों में भी करूणा का बहुत अधिक महत्व बताया गया है। 'कामायनी' में भी करूणा की यही भावना उस समय व्यक्त हुई जब मनु श्रद्धा द्वारा पालित पशु का वध करके श्रद्धा के समीप आते हैं तब श्रद्धा करूणा भाव से युक्त होकर मनु को समझाती हुई कहती है

"मनु ! क्या यही तुम्हारी होगी

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

उज्ज्वल नव मानवता !

जिसमें सब कुछ ले लेना हो

अन्त! बची क्या शवता ।“

बौद्ध दर्शन में आत्मा के साथ ही संसार को भी नाटक में भी क्षणवादी प्रभाव दिखाई देता है ।

इस प्रकार प्रसाद ने 'कामायनी' में करूणा को अत्यन्त सुन्दर रूप प्रकट किया है। प्रसाद पर बौद्ध दर्शन से ही क्षणिक वाद का प्रभाव पड़ा था।

परिवर्तनशील एवं क्षणिक बताया गया है। प्रसाद के 'चन्द्रगुप्त' क्षणभंगुरता के सम्बन्ध में चन्द्रगुप्त नाटक में चाणक्य कहता है तक माला गूँथी जाती हे, तब तक फूल कुम्हला जाते हैं।" प्रसाद ने 'कामायनी' में मानव जीवन के बिजली के प्रकाश के समान क्षणिक बताया है ।

'जीवन तेरा क्षुद्र अंश है व्यक्त नील धन माला में

'समझदारी आने पर यौवन चला जाता है, जब

सौदामिनी - सन्धि-सा सुन्दर क्षण भर रहा उजाला में।"

'अजातशत्रु' नाटक में संसार के समस्त साधनों को क्षणिक बताया गया है। 'अणु परमाणु, दुःखसुख चंचल क्षणिक सभी सुख साधन ।" प्रसाद क्षणिकवाद से प्रभावित होकर इस संसार के प्रत्येक पदार्थ, आत्मा को, जीवन को क्षणिक मानते हैं ।

मानवतावादी प्रवृत्ति को वैदिक काल से ही दख जा सकता है। मानवतावाद से ही प्रभावित होकर प्रसाद ने झरना, आँसू, कामायनी और लहर की रचना की। 'कामायनी' तो सम्पूर्ण मानवता का ही काव्य है। एक उदाहरण द्दष्टव्य है-

'औरों को हँसते देखो मनु

हँसो और सुख पाओ

अपने सुख को विस्तृत कर लो,

सबको सुखी बनाओ ।"

प्रसाद संकीर्णता से हट कर सीमा हीन मानवता की उदारता के पक्षपाती थे । मानवता से प्रभावित होकर प्रसाद ने समस्त भेद-भाव को भुलाकर सम्पूर्ण प्राणियों को एक कुटुम्ब की तरह रहने का आग्रह किया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रसाद के सम्पूर्ण काव्य पर मानवतावादी जीवन दर्शन का प्रभाव परिलक्षित होता है।

प्रसाद पर वैदिक दर्शन का व्यापक प्रभाव था जो उनके साहित्य में 'चित्राधार' से 'कामायनी' तक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्रसाद ने ब्रह्म के अस्तित्व पर सदैव विश्वास किया है उन्होंने ब्रह्मा के सगुण और निर्गुण दोनों

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

रूप का वर्णन किया है। वे ब्रह्मा का निवास हृदय में मानते है, और ईश्वर को सर्वव्यापी मानते हैं । 'कानन कुसुम' की एक कविता में सर्वात्मवाद की पुष्टि करते हैं-

" फिर वह हमारा, हम उसी के,

वह हमीं, हम वह हुये ।

तब तुम न मुझ से भिन्न हो

सब एक ही फिर हो गये।

वैदिक-दर्शन प्रसाद की मूल आत्मा है । 'काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध' के विविध निबन्धों में उन्होंने वैदिक दर्शन के मतों की विशद् पुष्टि की है।

प्रसाद को छायावाद का ब्रह्मा एवं श्रीगणेश कर्त्ता माना जाता है। प्रसाद के काव्य में छायावाद की सभी विशेषतायें मिलती हैं। छायावाद कवियों ने नारी सम्बन्धी सौन्दर्य एवं प्रेम का सूक्ष्म चित्रण किया है। कामायनी में प्रसाद की सौन्दर्य भावना छायावादी सौन्दर्य भावना की चरम अभिव्यक्ति है ।

"कुसुम कानन - अंचल में मन्द पवन प्रेरित सौरभ साकार,

रचित परमाणु पराग शरीर खड़ा हो ले मधु का आधार ।" "

वेदना की विवृत्ति छायावादी काव्य की सर्व प्रमुख विशेषता है। प्रसाद की वेदना की गहन अनुभूति उनके 'आँसू' काव्य दिखाई देती है ।

इस करूणा कलित हृदय में, क्यों विकल रागिनी बजती ।

क्यों हाहाकार स्वरों में, वेदना असीम गरजती।

व्यक्तिवाद की प्रधानता, प्रकृति-चित्रण, मानवतावाद आदि छायावादी प्रवृत्तियाँ प्रसाद के काव्य में सर्वत्र विद्यमान हैं।

रहस्यवादी भावना का प्रभाव प्रसाद की रचनाओं में प्रारम्भ से ही दिखाई देता है। उनकी रचना 'चित्राधार' में प्रकृति से सम्बन्धित कविताओं में कहीं-कहीं जिज्ञासा के भाव हैं, इसके साथ ही भक्तिपरक कविताओं में जिज्ञासा के भाव दिखाई देते हैं ।

"जो सर्वव्यापक तऊ सबसे परे है।

जो सूक्ष्म है पर तऊ बसुधा धरे ।

'झरना' में आकर प्रसाद का रहस्यवाद और भी उभर आया है। इसमें जिज्ञासा, प्रेम की प्राप्ति, मिलन की प्रतीक्षा, दर्शन और मिलन जैसी रहस्यवादी क्रमिक स्थितियों के भी दर्शन होते हैं । 'आँसू' के दूसरे संस्करण में रहस्यवादी स्पर्श है, वह बहुत सुन्दर है। 'कामायनी' भी रहस्यवादी भावना से खाली नहीं है । 'कामायनी' के 'आशा सर्ग' में कवि की रहस्यवादी भावना प्रकट हुई है ।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

" हे विराट! हे विश्वदेव! तुम कुछ हो ऐसा भान,

मन्द गम्भीर धीर स्वर संयुक्त यही कर रहा सागर गान ।

प्रसाद का दार्शनिक चिन्तन अन्य भारतीय दशनों से प्रभावित होते हुए भी पर्याप्त मौलिक एवं स्वतन्त्र है, उसमें पर्याप्त गहनता एवं गम्भीरता है। प्रसाद ने भारतीय दर्शनों का गहन अध्ययन किया और उन सिद्धान्तों, विचारों को ग्रहण किया जिन्हें वे मानव के लिए कल्याणकारी समझते थे ।

निष्कर्ष:

जयशंकर प्रसाद की कविता "कामायनी" हिंदी साहित्य के क्षेत्र में एक स्मारकीय कृति है, जो अपनी गहन दार्शनिक अंतर्दृष्टि और उत्कृष्ट काव्यात्मक कलात्मकता के लिए प्रसिद्ध है। कविता मानवीय भावनाओं, पौराणिक कथाओं और अस्तित्ववादी चिंतन के विषयों को जटिल रूप से बुनती है, जो मानव जीवन की जटिलताओं को दर्शाती एक समृद्ध चित्रमाला प्रस्तुत करती है। मनु, इडा और श्रद्धा के पात्रों के माध्यम से, प्रसाद तर्क, भावना और विश्वास के परस्पर क्रिया की खोज करते हैं, अंततः एक संतुलित और सामंजस्यपूर्ण अस्तित्व की वकालत करते हैं। "कामायनी" प्रसाद की साहित्यिक प्रतिभा का एक प्रमाण है, जो पाठकों को मानवीय स्थिति की एक कालातीत खोज और जीवन के दार्शनिक आधारों पर एक गहन टिप्पणी प्रदान करती है। यह कृति न केवल भारतीय साहित्य में प्रसाद की विरासत को मजबूत करती है, बल्कि समकालीन दर्शकों को प्रेरित और प्रतिध्वनित करती है, जो उनकी काव्य दृष्टि की स्थायी प्रासंगिकता को रेखांकित करती है।

संदर्भ :

1. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, प्रसाद प्रकाशन - रहस्य सर्ग, पृ0-243.
2. कामायनी, कर्म सर्ग, पृ0 - 126.
3. प्रसाद साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, डॉ० प्रेमदत्त शर्मा, जयपुर पुस्तक सदन, जयपुर, पृष्ठ-242.
4. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, प्रसाद प्रकाशन, चिन्ता सर्ग, पृ0-29.
5. जयशंकर प्रसाद, कामायनी, संजय बुक सेन्टर, वाराणसी, पृ0-42
6. नन्द दुलारे वाजपेयी, हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1987, पृ0 - 138
7. जयशंकर प्रसाद, कामायनी, संजय बुक सेन्टर, वाराणसी, पृ0-97.
8. विश्वम्भर मानव, कामायनी की टीका, पृ0-159
9. जयशंकर प्रसाद, कामायनी, संजय बुक सेन्टर, वाराणसी, पृ0–97.
10. जयशंकर प्रसाद, कामायनी, संजय बुक सेन्टर, वाराणसी, पृ0 – 88.

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

11. नामवर सिंह, कविता के नये प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, 1995, पृ0–76.

12. कामायनी, कर्म सर्ग, पृ0 - 129.

13. कामायनी, जयशंकर प्रसाद प्रसाद प्रकाशन, श्रद्धा सर्ग, पृ0-53.

14. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, प्रसाद प्रकाशन, आशा सर्ग, पृ0 - 36.